سُوْرَةُ الْهُمَزَةِ مَكِّيَّةٌ

सूरह हुमज़ह मक्का में उतारी गई (नाजिल हुई)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

आरंभ (शुरू) अल्लाह के नाम से जो अत्यंत दयावान, निरंतर (असीम) दयाशील है।

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةِ ۙ ① لا

विनाश (बर्बादी / विपत्ति) है प्रत्येक मुंह पर ताने देने वाले (कटु-भाषी) और पीठ पीछे बुराई करने वाले (चुगलखोर) के लिए।

الَّذِىْ جَمَعَ مَالًا وَّعَدَّدَهٗ ② لا يَحْسَبُ اَنَّ مَالَهٗۤ اَخْلَدَهٗ ③ ج

वह जो (जिसने) धन संचित (जमा) किया और उसे गिन-गिन कर रखा। 2 वह समझता है कि उसका धन उसे सदैव जीवित (अमर) रखेगा। 3

كَلَّا لَيُنْۢبَذَنَّ فِى الْحُطَمَةِ ④ لا صلے

कदापि नहीं ! वह अवश्य (निश्चय ही) 'हुतमा' (चूर्णित कर देने वाली) में फेंका जाएगा।

وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا الْحُطَمَةُ ⑤ ط

और तुम्हें क्या पता, 'हुतमा' क्या है ?

نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ ⑥ لا الَّتِىْ تَطَّلِعُ عَلَى الْاَفْـِٕدَةِ ⑦ ط

अल्लाह की भड़काई हुई (प्रज्वलित) आग ! 6 जो हृदयों (दिलों) तक जा पहुंचती (चढ़ जाती) है। 7

اِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّؤْصَدَةٌ ⑧ لا فِىْ عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ⑨ ع

निःसंदेह वही (आग) उन पर बंद कर (घेर) दी जाएगी। 8 लंबे - लंबे स्तंभों में (घिरे / जकड़े हुए)। 9